Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 7 | JULY 2023

मध्यकालीन राजस्थान के जल प्रबंधन का मानव की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर प्रभाव : एक ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ ममता शर्मा [1]

[1] इतिहास विभाग

ABSTRACT:

इस सम्पूर्ण सृष्टि में विभिन्न ग्रह, उपग्रह, आकाशगंगाएँ, खगोल पिण्ड आदि हैं जिनमें से केवल पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन संभव है। पृथ्वी पर जीवन का आरम्भ जल की उत्पत्ति के साथ ही हो गया था। पृथ्वी पर जीव की उत्पत्ति सर्वप्रथम जल में एक कोशिकीय जीवों के रूप में हुई। कालान्तर में बहुकोशिकीय जीव व विशालकाय प्राणियों व कई प्रजातियों के जीवों के विकास का आधार जल ही रहा । अत: इस पृथ्वी पर सभी जीवों को जीवन प्रदान करने में जल का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जल ही मानव सहित सम्पूर्ण जीवों के जीवन का एक प्रमुख आधार रहा है। अत: जल संरक्षण एवं प्रबन्धन के इस ऐतिहासिक विकास क्रम को समझने के लिए अतीत का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। अस्तु मध्यकालीन राजस्थान में जल प्रबन्धन एक गहन, विशद् व गंभीर अध्ययन का विषय है। मध्यकालीन राजस्थान में जल प्रबन्धन का कार्य राज्य की विभिन्न छोटी-बड़ी रियासतों में हुआ था। किन्तु कतिपय जल प्रबन्धन के कार्यों में शासक वर्ग को ही इसका श्रेय दिया गया था जबकि वास्तविक तथ्यों के आधार पर अध्ययन करने पर हमें जानकारी मिलती है कि जल प्रबन्धन कार्य में आमजन का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मानव सभ्यता के विकास की विभिन्न अवस्था में हमें जल संग्रहण एवं प्रबन्धन के मानव द्वारा किए गए प्रयासों की जानकारी मिलती है। फल स्वरुप यह निश्चित है कि जब मानव किसी भी क्षेत्र के किसी भी कार्य में संलग्न होता है तो उन गतिविधियों का प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही रूपों में उसको भी प्रभावित करता है इसी प्रकार मध्यकालीन राजस्थान के जल प्रबंधन का मानव की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर भी अत्यधिक गहरा प्रभाव पड़ा है जिसका अध्ययन अपेक्षणीय है।

KEYWORDS:

मध्यकालीन राजस्थान , जल प्रबंधन , मानव , सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति , प्रभाव , ऐतिहासिक विश्लेषण ।

आलेख प्रस्तुति

यथार्थ में जल स्त्रोत मानव की सामाजिक व आर्थिक स्थिति को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। मध्यकाल में राजस्थान में हुए विदेशी आक्रमणों के कारण यहाँ मुस्लिम धर्म का विकास हुआ। जो धीरे-धीरे भारतीय संस्कृति में ही घुल-मिल गया अर्थात् इसी में समाहित हो गया। फलस्वरूप राजस्थान में एक मिश्रित संस्कृति का विकास हुआ। इस संस्कृति में धार्मिक मान्यताएँ व परम्पराएँ एक-दूसरे से भिन्न होने के बावजूद परस्पर आचार-विचार, परम्पराओं, मान्यताओं व विज्ञान तकनीक आदि का स्थानान्तरण हुआ। जिसमें भारतीय संस्कृति में इस मिश्रित संस्कृति का प्रस्फुटन हुआ। जिसके कारण भारतीय समाज विभिन्न जातीय समूहों में बंट गया। इस तरह बदलती सामाजिक व्यवस्था के कारण कई रूढिवादी विचारों, परम्पराओं, मान्यताओं व धार्मिक बाध्यताओं के द्वारा जाति व्यवस्था को कठोर बना दिया गया। जिसमें "व्यवसाय चयन की स्वतंत्रता समाप्त कर दी गई। वह निर्धारित कर दिया गया कि जो व्यक्ति जिस समाज में जन्म लेगा उसे उसी समाज का व्यवसाय करना होगा।

भारतीय समाज का यह विभाजित स्वरूप जातिगत आधार के अलावा लिंग व आर्थिक स्थिति के आधार पर भी था। तत्कालीन समाज पुरुष प्रधान था। जिसके कारण महिलाओं को घरेलु कार्यों, मजदूरी, कृषि कार्यों आदि में कार्य करवाया जाता था । तब समाज में महिलाओं की स्थिति निम्न स्तर पर थी। इन कठोर परम्पराओं की बेडियों से महिलाओं को बांध दिया गया। जिसके कारण महिलाएँ शिक्षा से वंचित हो गई। मध्यकाल में कृषक व मजदूर वर्ग की स्थिति भी शोचनीय बनी हुई थी। जिस कारण अनेक प्रकार की विसंगतियां देखने को मिलती थीं। इस तरह मध्यकालीन समाज में जाति, लिंग व आर्थिक स्थिति के आधार पर सामाजिक विभेदता की स्थिति स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। मध्यकाल में निर्मित जल स्त्रोतों के समीप ही इस मिश्रित संस्कृति का विकास हुआ। जिसमें यहाँ के रीति-रिवाज, परम्परा, खान-पान, रहन-सहन, भाषा व धार्मिक स्थिति आदि को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्रभावित किया है।

धार्मिक स्थिति पर प्रभाव

मध्यकाल के आरम्भिक चरण में हुए विदेशी आक्रमणों से कई जातियों का भारत में प्रवेश हुआ जिनमें अरब, तुर्क, अफगान, मुगल, मंगोल, इण्डो-ग्रीक (पर्शियन) आदि प्रमुख है। इन विदेशी आक्रान्ताओं के साथ इसकी धार्मिक मान्यताएँ परम्पराएँ, खान-पान, वेशभूषा, कला-संस्कृति आदि का भी भारतीयकरण हो गया था। अतः हमें मध्यकाल में भारतवर्ष में मुख्य रूप से उत्तर भारत में बड़ी संख्या में मुस्लिम धर्मावलम्बी लोगों की संख्या में वृद्धि देखने को मिलती है। मध्यकाल में मुस्लिम धर्म की विचारधारा तेजी से प्रचलन में आई व इस समय दिल्ली के तख्त पर मुस्लिम शासकों का शासन होने के कारण इस धर्म का प्रचार भी बड़ी संख्या में देखने को मिलता है। इसमें सर्वाधिक योगदान सूफी संतो का रहा है। जिन्होंने मुस्लिम धर्म की अच्छाइयों, सरल धार्मिक नीति परोपकार पूर्ण आचरण द्वारा कई हिन्दू धर्म के लोगों को प्रभावित किया जिसकी वजह से हिन्दुस्तान में धर्म परिवर्तित कर मुस्लिम बनने वाले एक वर्ग का उदय हुआ। दिल्ली सल्तनत पर अब मुस्लिम धर्म के अन्तर्गत आने वाली जातियों में तुर्क, अफगान, अरब, खिलजी, तुगलक, लोदी, सैयद, भारतीय मुसलमान आदि का प्रभाव था। कालान्तर में मुगल शासन के काल में मुगल बादशाह अकबर के शासन से धार्मिक सहिष्णुता के अन्तर्गत् गैर मुस्लिम धर्मों को धार्मिक यात्रा कर जजिया को हटा दिया। इस प्रकार देशभर में आपसी सद्भावना व भाईचारे की भावना पैदा हुई। जिसका प्रभाव जल संसाधनों, स्रोतों , उनके प्रबंधन, उनके प्रयोगों और उपयोग पर भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

मध्यकाल में हिन्दू, मुस्लिम के साथ बौद्ध, जैन धर्म की भी प्रचलन था । हॉलांकि बौद्ध धर्मावलम्बियों की संख्या में तेजी से गिरावट आई व कई लोगों ने पुनः हिन्दू धर्म अपना लिया था। वही जैन धर्म अभी भी व्यापारिक वर्ग के वैश्य सेठ – साहुकारों, व्यापारियों द्वारा अपनाये जाने के कारण निरन्तर विकास कर रहा था।

इन विभिन्न धर्मो के आपसी मेलजोल के कारण एक नवीन मिश्रित भारतीय संस्कृति का उदय हुआ। जिनका प्रभाव न केवल बोलचाल, भाषा, खान-पान, रहन -सहन पर ही रहा अपितु एक अलग संस्कृति से आए लोगो ने अपने देश की विभिन्न तकनीकी ज्ञान, वैज्ञानिक चेतना, कारीगरी, हस्तकला, धार्मिक विचार, कला व संस्कृति आदि का भी आदान-प्रदान देखने को मिला । इस मिश्रित संस्कृति के कारण राजस्थान मे निर्मित विभिन्न, महल, भवन, किलो, छत्तरियों, स्तम्भों, आदि में इस मुस्लिम स्थापत्य कला का प्रभाव परिलक्षित होने लगा। जल स्त्रोतों के निर्माण की विभिन्न तकनीकों के साझा इस्तेमाल से नवीन वास्तुकला व तकनीक के उपयोग द्वारा राजस्थान में मिश्रित संस्कृति के प्रतीक कई महत्वपूर्ण स्मारकों का निर्माण हुआ था। तत्कालीन समाज के व्यक्ति एक साथ मिलकर जल प्रबंधन के विभिन्न स्रोतों का निर्माण करने में तत्पर होते थे एक साथ जल स्रोतों का निर्माण कर अपने दैनिक उपयोग में जल के प्रयोग के लिए भी उनकी भावनाएं एक दूसरे के प्रति सम्मानजनक रहीं । तथापि धार्मिक विभिन्नताओं के कारण ऐसे अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं जिनके माध्यम से जल प्रयोग के मतभेद का वर्णन भी मध्यकालीन राजस्थान में प्राप्त होता है।

सामाजिक स्थिति पर प्रभाव

राजस्थान में सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप जाति के इर्द-गिर्द बुना हुआ है। जिसमें समाज की विभिन्न जातीय समूह में पर्याप्त भिन्नता देखने को मिलती है। मध्यकाल में राजस्थान में इसी जातिगत व्यवस्था वाले समाज के कारण छुआछुत का प्रभाव भी देखने को मिलता है। जिसका प्रभाव प्रत्येक सामाजिक गतिविधि, धार्मिक आयोजनों, वैवाहिक आयोजनों, व्यवसाय, व्यापार इत्यादि पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

मध्ययुगीन सामाजिक व्यवस्था के इसी स्वरूप के कारण इस तरह जातिगत विभेदता के लक्षण विभिन्न स्वरूपों में दिखाई देते है। जिनमें मुख्य रूप से खान-पान में दृष्टिगोचर होता है। इस काल में बने विभिन्न जल स्त्रोतों में कुओं, तालाबों, बावडीयों, कुईयों, सरोवर (झील) आदि में जातिगत आधार पर भेदभाव के कई ऐतिहासिक प्रमाण मिले हैं। जो यह दर्शाते है। कि जातिगत स्तर समाज में कितना बँटा हुआ था। मकराना की बावडी में लगे एक शिलालेख से हमें जानकारी मिलती है। कि उक्त शिलालेख हिजरी संवत् 1062 (1651ई.) में मिर्जा बेग द्वारा लिखवाया गया। जिसमें यह उल्लेख मिलता है कि निम्न जाति के व्यक्तियों को उच्च जाति के लोगों के साथ इस बावडी पर से पानी नहीं भरने का आदेश दिया गया है। यह ऐतिहासिक प्रमाण हमें तत्कालीन समय की सामाजिक व्यवस्था, जातिगत छुआछुत का स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है। भारतीय समाज में जातिव्यवस्था के इस स्वरूप के कारण हमें मध्ययुगीन राजस्थान में समाज की एक बहुत बड़ी आबादी जो शूद्र रूप में मानी जाती थी।तत्कालीन मानसिकतायें उनके साथ हो रहे जातिगत सामाजिक भेदभाव, प्रताड़ना, अन्याय आदि को परिलक्षित करती है। इस काल में कई ऐसे प्रमाण व उद्धरण मिले हैं जिसमें कुओं का नाम जाति के आधार पर रखकर इनका बँटवारा होता था। इन जल स्त्रोतों के निर्माण का उद्देश्य आमजन के हितार्थ पूण्यार्थ कार्यों के निमित्त करवाया गया था।' किन्तु हमारी सामाजिक व्यवस्था में उच्च वर्ग जो स्वयं को स्वर्ण कहते है। उनके द्वारा जातिगत आधार छुआछूत की मानसिकता के चलते मानवीय भावनाओं व संवेदनाओं को दरकिनार कर कुंठित सामाजिक रूढियाँ व परम्पराओं के चलते समाज के एक बड़े वर्ग को इन जल स्त्रोतों से दूर रखने का प्रयास किया गया था। सामाजिक व्यवस्था का यह स्वरूप मध्ययुगीन साज में 'जल' को लेकर किए गए "जातिगत भेदभाव को परिलक्षित करते है। जो निश्चित ही समाज के लिए एक अभिशाप है।

सामाजिक विभेदता का प्रभाव

सामाजिक विभेदता किसी भी राज्य की समृद्धि व अवनति का परिचायक होती है। जिस राज्य में सामाजिक विभेदता कम देखी जाती है वह राज्य आर्थिक रूप से सम्पन्न व सामाजिक रूप में उच्चतम आदर्शों से युक्त होता है। वह राज्य निरन्तर प्रगतिशील रहता है । जबकि इसके विपरीत मध्यकालीन राजस्थान में सामाजिक विभेदता के विभिन्न उदाहरण दृष्टिगोचर होते हैं । यहां सामाजिक विभेदता जाति, लिंग, आर्थिक स्थिति आदि स्वरूपों में परिलक्षित होती रही है। जहाँ समाज के एक बड़े वर्ग के साथ सामाजिक भेदभाव पूर्ण व्यवहार होता रहा है। वहीं लिंग के आधार पर स्त्री व पुरूष में कार्य की प्रकृति, व्यवसाय, सामाजिक नियमों, विभिन्न उत्सव आयोजन इत्यादि में परस्पर भेदभाव पूर्ण व्यवहार सामाजिक विभेदता को इंगित करती है।

मध्ययुगीन राजस्थान की सामाजि पृष्ठभूमि के अध्ययन से पता चलता है कि समाज सम्पन्न व निर्धन वर्गों में बंटा हुआ था । जिसके कारण समाज का बड़ा वर्ग निर्धन रहा जो अपनी दैनिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए सम्पन्न वर्ग के लोगों पर निर्भर रहता था। हर स्वरूप उसी दिन रात अपने जीवन में जल स्त्रोतों के प्रयोग को लेकर विभिन्न प्रकार की प्रताड़नाओं को सहना पड़ता था। मध्ययुगीन राजस्थानी समाज सामाजिक विभेदता के कारण निर्धन वर्ग के लोगों को दयनीय दृष्टि से देखता था। उनके लिए अत्यधिक कठोर नियम कानून बना दिए गए थे। जिनमें परेशानियों के चलते हुए सीमित जल संसाधनों में ही उन्हें अपने जीवन यापन करने के लिए मजबूर कर दिया गया था।

सम्पन्न वर्ग के लोग ही सामाजिक नियमों के आधार पर परम्पराएँ व मर्यादाओं से युक्त सामाजिक व्यवस्था का निर्धारण करते थे। अतः वह अपने हितों के अनुकूल नियम बनाते थे। जिसकी वजह से समाज विभाजित स्वरूप में दिखाई देता है।

सम्पन्न वर्ग जहाँ जल स्त्रोतों के निर्माण में अपनी धनराशि खर्च कर पुण्य कमाता था। वहीं निर्धन वर्ग पानी की बूँद-बूँद के लिए तरसता था। उसको अपनी परिधि में आने वाले कूंओं, तालाब आदि से ही पानी का प्रयोग करना होता था। इस तरह मध्ययुगीन समाज में विभिन्न सामाजिक विभेदता उस समय के समाज रूपी दर्पण के आन्तरिक भावों को प्रदर्शित करती है।

आर्थिक स्थिति पर प्रभाव

कृषि व सिंचाई के रूप में - मध्ययुगीन राजस्थान में कृषि राजस्व प्राप्ति का एक प्रमुख साधन था । अतः यहाँ मनुष्य के लाभ के उद्देश्य से कृषि की पैदावार बढाने की दिशा में विभिन्न प्रयास किए गए। कृषि आमजन की आजीविका चलाने का प्रमुख माध्यम बन गया था। अतः विभिन्न रियासतो में निवास कर रहे लोगों की एक बड़ी आबादी पूर्णतः इन पर निर्भर थी ।

मध्यकाल में राजस्थान में शासक वर्ग द्वारा कृषि पैदावार बढाने के उद्देश्य से जल स्त्रोतों का निर्माण करवाया गया। कई रियासतों में राजाओं, रानियों, सामन्तों व जागीरदारों द्वारा अपने क्षेत्र में कुएँ, बावडी, तालाब, बेरी, नाडी, झील आदि का निर्माण कर इन्हें कृषि कार्यों में सिंचाई के साधन के रूप में उपयोगी बनाया गया। राजस्थान में वर्षा की अनियमिता की स्थिति के कारण यहाँ अकाल व सूखे की समस्या बनी रहती थी। अतः यह जल स्त्रोत सिंचाई के महत्वपूर्ण साधन बन गए थे।

मध्यकालीन राजस्थान में सिंचाई के साधन

रहँट –

रहँट को संस्कृत भाषा में अरघट्ट, अरहँट, घटी यंत्र आदि नामों से प्रयुक्त किया गया है। रहँट एक ऐसा यंत्र है। जिसमें कुओं व बावडियों से जल को बाहर निकालने हेतु एक धुरी से दो बैलो को इस तरह बांधा जाता है कि वह गोल चक्कर काटते है। इस तरह पद्धति को ही रहँट सिंचाई कहा जाता है। रहँट को मेवाड में पावटी कहा जाता है। रहँट का उपयोग राजस्थान की कई रियासतो में होता है किन्तु विशेषतः पर्वतीय क्षेत्रों इनका उपयोग अधिक होता था। जिस कुएँ में रहँट का उपयोग होता था वह रहटवाला कुआँ नाम से पुकारा जाता था। रहँट का उपयोग प्रत्येक कुएँ में नहीं होता था। रहँट का पक्के कुएँ में ही प्रयोग होता था।

चडस

चडस कुआँ व बावडियों से जल को निकालने हेतु उपयोग में लिया जाता है। यह चमड़े से बना होता है। इसके पैदे में हाथी की सूण्ड की तरह लगी होती है जिसे चडस, चर्ड कहते है चडस भैंस या भैंसों तथा बैल की खाल से बनाया जाता है। इसका निर्माण रेगर व चमार जाति के लोग किया करते थे। इसकी इस प्रकार सिलाई की जाती थी कि यह गोलाकार या चौकरीदार मुँह वाला चमडे का थैला सा बना जाता था। इसके नीचे सूंड लगाई जाती थी। इसको लगाने का मुख्य कारण इससे पानी को आसानी से खाली किया जा सकता था। चडस को कूप में उतारने से पूर्व इसे रस्सी में मजबूत बांध जाता था। वह ऐसा बंधा होता था कि बैलो द्वारा खीचने पर उसे दाबडे या आधार तल पर ले आता जहाँ सूंड ढीली करने पर जल खाली हो जाता था। इस प्रकार कुएँ व बावडी के जल को चडस द्वारा बाहर लाने की यह सिंचाई तकनीक मध्यकाल में प्रयुक्त की जाती थी।

ढींकली

यह भी सिंचाई का एक प्रमुख साधन था। इसका उपयोग छोटे कुओं, कुईयों व बेरीयों में किया जाता था। इसमें कुएँ के ऊपर एक घूणी लगाकर उसके सिर पर बलीडी लगाकर एक सिरे को रस्सी की डोल यानि चमड़े से बना पात्र "चडनी" से बांध कर कुएँ से पानी निकाला जाता था।

कुतुम्बा

यह लम्बे सीधे तने वाले वृक्ष की नाल को खोखली करके पादप के रूप का बना होता था। पाइप के तनो को जोड़कर बड़ा पाइप बना लिया जाता था। इसका एक छोट जो चाटू की तरह बताया जाता था, उसे पानी में डुबो कर रखते थे ताकि जल में दबे छोर में जल स्वतः भरकर ताल के द्वारा दूसरे छोर से निकल कर खेत की नाली में चला जाता था।

अन्य सिंचाई के साधन –

इनमें तालाबों के जल से सिंचाई हेतु नहरों द्वारा जल खेतो तक लाया जाता था। इन नहरों को मोरियाँ कहते थे। पर्वतीय क्षेत्रो में पत्थरों पेड़ के लट्ठो, मिट्टी, झाड़ियो आदि के द्वारा वर्षाकाल में पानी रोककर छोटे बांध नुमा आकृति में वर्षा जल को खेतो में सिंचाई के रूप में उपयोग में लाया जाता था। वर्षाकाल में खेतो में सिंचाई के रूप में उपयोग में लाया जाता था । वर्षाकाल में खेतों में किसान वर्ग धोरे व मोरी बनाकर उत्तरते ढाल वाले भाग पर जली को संग्रहित कर सिंचाई में उपयोग लेता था। मध्यकाल में राजस्थान में सिंचाई के साधनों का

पर्याप्त विकास हुआ जिसमें कृषि पैदावार में वृद्धि के साथ-साथ राज्य के राजस्व में भी वृद्धि हुई थी।

भू-राजस्व

मध्यकाल में कृषि ही भू-राजस्व का प्रमुख आधार था। कृषि हो राज्य की आय का एक प्रमुख स्रोत बन गया था। मुगल शासनकाल में भू-राजस्व की विभिन्न प्रणालियों का उपयोग किया जाने लगा था। राजस्थान में राजपूत शासकों द्वारा भू-राजस्व प्राप्ति के लिए मुगलकालीन भू-राजस्व प्रणाली को अपनाया गया था। विभिन्न रियासतों में राजा को ही भूमि का स्वामी माना जाता था।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि मानव जीवन पर उसके चारों ओर के वातावरण का अत्यधिक गहरा प्रभाव पड़ता है। उसके चारों ओर विद्यमान आवश्यक आवश्यकताओं के संसाधन भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। इस दृष्टि से देखा जाए तो मध्यकालीन राजस्थान के समाज का वातावरण विभिन्न प्रकार की विसंगतियों से युक्त था। वह एक ऐसी संस्कृति थी जिसमें विभिन्न धर्मों का समागम हो चुका था। विभिन्न प्रकार की जातियों के भेद प्रभेद वहां पर विद्यमान थे। इन सब के चलते हुए समाज की धार्मिक आर्थिक सामाजिक स्थिति में भी अनेक प्रकार के मतवैभिन्न्य तो देखने को मिलते ही थे साथ ही समाज अनेक प्रकार की मान्यताओं परंपराओं रूढ़ियों रीति-रिवाजों से भी ग्रसित था। जिसके कारण जल प्रबंधन एवं जल स्रोतों पर सामाजिक स्थिति का गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है। जहां समाज का उच्च वर्ग हर प्रकार की सुविधाओं से युक्त था वहीं समाज का निम्न वर्ग जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता जल की एक एक बूंद के लिए तरसता था। हालांकि वर्तमान में राजस्थान राज्य का सामाजिक वातावरण अपने आप में अत्यधिक सुगम है तथापि प्राचीन काल से चली आ रही मान्यताओं परंपराओं का प्रभाव यहां के जल संसाधन के प्रयोग पर आज भी परिलक्षित होता है।

REFERENCES

1. गहलोत, जगदीश, मारवाड राज्य का इतिहास, मानसिंह पुस्तकालय दुर्ग, जोधपुर, 1991.
2. शर्मा, डॉ. जी.एन. सोशल लाईफ इन मिडिवल राजस्थान।
3. टॉड, कर्नल जेम्स, एनाल्स एन्टीक्वीटिज ऑफ राजस्थान जिल्द-1.
4. डॉ. कैलाशनाथ व्यास व देवेन्द्र गहलोत, राजस्थान की जातियों का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, जोधपुर, 1992.
5. शर्मा, डॉ. गोपीनाथ, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास।
6. डॉ. पेमाराम, मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन, अजमेर, 1997.
7. राणावत, डॉ. ईश्वरी सिंह, राजस्थान के जल संसाधन।
8. ओझा, डॉ. जे. के. मेवाड का इतिहास।
9. ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास भाग -2
10. शर्मा, बी के आधुनिक राजस्थान का आर्थिक इतिहास (1818-1949) जयपुर।
11. व्यास, गोपाल वल्लभ, मेवाड़ का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन।